माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
इतिहास	1	1	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

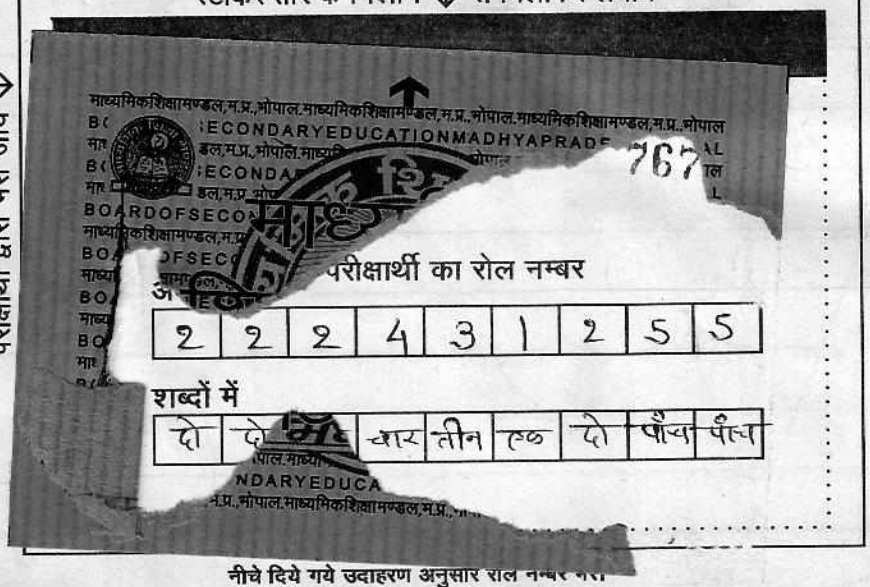

माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल.माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल.माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल
SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADE
BOARDOFSECO
767

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	2	2	4	3	1	2	5	5

शब्दों में

दो	दो	[illegible]	चार	तीन	एक	दो	पाँच	पाँच

NDARYEDUCA
.म.प्र.,भोपाल.माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 12

ग – परीक्षा की दिनांक 28 02 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.EXAM-2022 केन्द्र क्रमाँक-241035

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
प्रवीण साहू Sahu 28/02/22	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
R.S. Ningwal Varishta Adhyapak Model School Dhar (M.P.) HTWD/110/031	

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करें और न ही छात्र उपयोग में लें। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखे उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्ताक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कु

प्रश्न क्र.

प्र.क्र. 1 का उ.

उ. 1 मगध।
उ. 2 सातवाहन।
उ. 3 लुम्बिनी।
उ. 4 अजमेर।
उ. 5 उपर्युक्त सभी सही हैं।
उ. 6 सिंधु मांझी।

प्र.क्र. 2 का उ.

उ. 1 मद्रास।
उ. 2 महात्मा गाँधी।
उ. 3 सीमान्त।
उ. 4 15 अगस्त।
उ. 5 हस्तिनापुर।
उ. 6 श्री कृष्ण।
उ. 7 भोपाल।

प्र.क्र. 3 का उ.

उ. 1 वी.एस. सुकथांकर → महाभारत का समालोचनात्मक सं
उ. 2 विनय पिटक → बुद्ध की शिक्षाएँ (नियमावली
उ. 3 सिंह शीर्ष → सारनाथ।
उ. 4 रैयतवाड़ी → औपनिवेशिक राजस्व प्रणाली
उ. 5 अमीर खुसरो → मध्यकालीन महान कवि और
उ. 6 शंकरदेव → कीर्तन और सत्संग।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र.क्र. 4 का उ.

उ. 1 शिव की

उ. 2 अकबर

उ. 3 ब्रिटिश वॉयसराय

उ. 4 अंग्रेजों की

उ. 5 1906ई.

उ. 6 1942

उ. 7 पं. जवाहरलाल नेहरू

प्र.क्र. 5 का उ.

उ. 1 सत्य

उ. 2 सत्य

उ. 3 असत्य

उ. 4 सत्य

उ. 5 सत्य

उ. 6 असत्य

प्र.क्र. 6 का उ. [अथवा]

उ. 6 मुगल मौर्य साम्राज्य के प्रमुख पाँच राजनीतिक केन्द्र निम्न हैं -।

1. पाटलिपुत्र
2. तक्षशिला
3. तोसली
4. सुवर्णगिरि

~~गिरिव्रज~~

5 अवन्ति

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्र.क्र.7 का उ.

उ.7 बहिर्विवाह - गोत्र से बाहर किया जाने वाला विवाह बहिर्विवाह कहलाता है। जब दो विभिन्न गोत्रों के बीच विवाह संबंध स्थापित हो तो वह प्रथा बहिर्विवाह पद्धति कहलाती है।

प्र.क्र.8 का उ.

उ.8 महावीर जी की दो शिक्षाएँ निम्न हैं।

M
1. सभी जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखना विशेषकर
P
मनुष्यों, जानवरों और कीड़े-मकोड़ों को न मारना जैन
B
धर्म का केन्द्र बिन्दु है।

S
2. सभी मतों का सम्मान करना और सभी धर्मों के प्रति
E
सहिष्णुता रखना।

प्र.क्र.9 का उ. [अथवा]

उ.9 वैष्णववाद परम्परा में मुख्य रूप से भगवान विष्णु की पूजा की पूजा की जाती है और उनके विभिन्न रूपों जैसे कृष्ण, राम, जगन्नाथ आदि की पूजा होती है।

प्र.क्र.10 का उ.

उ.10. प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर पुरी (उड़ीसा) में स्थित है और यहाँ भगवान जगन्नाथ जिन्हें विष्णु का रूप माना जाता है की पूजा की जाती है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र.11 का उ. [अथवा]

उ.11 बुकानन एक चिकित्सक था जिसने बंगाल चिकित्सा सेवा में अपनी सेवाएँ दी थी। उसने यहाँ एक चिकित्सक के रूप में काम किया और बंगाल चिकित्सा सेवा को उन्नति प्रदान की।

प्र.12 का उ. [अथवा]

उ.12 मुम्बई प्रारंभ में सात द्वीपों का शहर था। धीरे-धीरे वहाँ की जनसंख्या बढ़ती गई तो इन सातों द्वीपों को एक दूसरे से जोड़ दिया गया। इस प्रकार एक विशालतम शहर अस्तित्व में आया।

M P B S E

प्र.13 का उ. [अथवा]

उ.13 गाँधी जी ने नमक कानून के विरोध में एक आन्दोलन चलाया और अपने आश्रम से समुद्र की चलना प्रारंभ किया और 6 अप्रैल, 1930 को उन्होंने डाँडी में नमक कानून तोड़ दिया।

प्र.14 का उ. [अथवा]

उ.14 बी.एन राव संविधान के प्रमुख सलाहकार थे। जिन्होंने कानूनी व्यवस्था और अनुच्छेद के विषय में संविधानिक सभा को प्रमुख सहा. सलाह दी। ये संवैधानिक सलाहकार थे।

प्रश्न क्र.

प्र.क्र 15 का उ. [अथवा]

उ.15 हिन्दुस्तानी भाषा उस भाषा को कहते हैं जिसमें हिन्दी और उर्दू (फारसी) दोनों भाषाओं से मिलकर बनी हो। यह न तो पूर्ण संस्कृतनिष्ठ और न ही पूर्णतः उर्दू निष्ठ हो।

प्र.क्र 16 का उ. [अथवा]

उ.16 मौर्य साम्राज्य का काल भारतीय में एक प्रमुख काल माना जाता है। मौर्य साम्राज्य भारत पहला इतना विशाल साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सम्राज्य था, जिसका शासन सम्पूर्ण भारत पर था। इससे पहले भारत में ऐसा कोई साम्राज्य नहीं था। मौर्य साम्राज्य अपने योग्य शासकों के कारण भी एक प्रमुख साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य मे चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार और अशोक जैसे प्रतापी शासक हुए है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना 321 ई.पू. मे की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अनेक उपलब्धि हासिल की जैसे यूनानियों को पश्चिमोत्तर से भगाया, सेल्युकस पराजित करना आदि। इनके बाद पौत्र अशोक ने भी अनेक कार्य किए, अशोक भारत के महानतम सम्राटों में से एक हैं, इन्होंने कश्मीर, कलिंग आदि महत्वपूर्ण जगहों को मौर्य साम्राज्य जोड़ा। अशोक के काल के बौद्ध धर्म का भी पर्याप्त विकास हुआ। अशोक ने अनेक कार्य किए जो उसकी प्रजा के हित में थे। मौर्य काल मे कला और संस्कृति का भी उत्थान हुआ, मौर्य काल में अनेक स्तूप जैसे सारनाथ, साँची आदि के निर्माण और अभिलेख शिलालेख आदि इन सभी कारणों से मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल माना जाता है।

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

प्र० क्र० 17 का उ०

उ० 17 महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े 4 प्रमुख स्थल निम्न है-

1. महात्मा बुद्ध के जन्म का स्थान लुम्बिनी - भगवान महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल के लुम्बिनी में हुआ था। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था।

2. बोधगया - बोधगया में भगवान महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यह स्थान बिहार में है। यहाँ एक वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुयी थी। 6 वर्षों तक कठोर तपस्या करने के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।

3. सारनाथ - यह वह स्थान है, जहाँ महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था। सारनाथ में बुद्ध ने पाँच लोगों को उपदेश दिया था। सारनाथ में अशोक ने एक शानदार स्तूप का निर्माण करवाया था।

4. कुशीनगर - महात्मा बुद्ध को कुशीनगर में निर्वाण की प्राप्ति हुई थी। यहाँ उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

प्र०क्र० 18 का उ० [अथवा]

उ० 18 कृषि समाज में महिलाएँ उत्पादन प्रक्रिया में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती थी। कृषि समाज में महिलाओं की स्थिति को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है :-

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

1. कृषि समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी और वे भिन्न प्रकार के कृषि कार्यों में भाग लेती थी। पुरुष खेत जोतते हल चलाते थे और महिलाएँ बुआई, निराई कटाई के साथ पकी हुई फसल का दाना निकालने का कार्य करती थीं।

2. किसी वस्तु का जितना वाणिज्यिकरण होता था, उसके उत्पादन के लिए महिलाओं के श्रम की उतनी ही आवश्यकता होती है। जरूरत पड़ने पर किसान और दस्तकार महिलाएँ नियोक्ताओं के घरों और बाजारों में भी जाती थी।

3. समाज में महिलाओं को उनकी प्रजनन क्षमता के कारण विशेष संसाधन के रूप में देखा जाता था। मध्यकालीन समाज श्रम पर निर्भर था।

प्र.क्र. 19 का उ. [अथवा]

उत्तर - महात्मा गाँधी ने साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए अनेक प्रयास किए जिनमें हिन्दु और मुस्लिमों को समझाना की वे शान्ति के साधनों का प्रयोग, एक दूसरे की रक्षा करना परस्पर प्रेम आदि। गाँधी हिन्दू और मुसलमानों के भिन्न राष्ट्र के सिद्धान्त के प्रबल विरोधी थे। गाँधी ने साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए अनशन भी की। देश के लोगों से शान्ति बनाए रखने की अपील और आपसी समस्याओं बातचीत द्वारा सुलझाने की गुजारिश भी की। वे प्रत्येक स्थान पर हिन्दु और मुसलमानों से एक-साथ रहने और एक दूसरे के प्रति घृणा न पालने का उपदेश देते थे। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए सत्याग्रह का सहारा भी लिया था। जिस दिन भारत के बँटवारे के कारण देश में चारों ओर

पृ० 10 क अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

मारकाट, लड़ाई-झगड़े और मारकाट का माहौल था
उस दिन वे कलकत्ता मे बहुत ही था दुखी तथा शांति की
स्थापना करने का प्रयास कर रहे थे | यद्यपि देश में
फिर भी साम्प्रदायिक दंगे बंद नही हुए और हिन्दू और
मुसलमानों के बीच खूनी संघर्ष चलता रहा | गांधी जी को
विश्वास था कि देश मे साम्प्रदायिक एकता पुनः स्थापित
हो जाएगी, किन्तु किन्तु अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी
साम्प्रदायिक की एकता की स्थापना नहीं हो सकी

प्र० 20 का उ० [अथवा]

M P B S E

उ० 20 मीराबाई - मीरा बाई भक्ति परम्परा की एक सुप्रसि
कवियत्री थी | मीराबाई राजस्थान के मेड़त
जिले की राजकुमारी थी | उनका विवाह राजस्थान के
राज परिवार में हुआ था | वे भगवान कृष्ण की परम
भक्तिन थी और उन्हें अपना सबकुछ मानती थी | उनका
विवाह उनके पिता ने उनकी मर्जी के खिलाफ किया था |
उन्होंने पत्नि के अपनो अपने कर्तव्यों को निभाने से
मना कर दिया और न ही वे अपने माता होने के कर्त
निभाना चाहती थी | वे भगवान श्रीकृष्ण को ही अप
एकमात्र पति मानती थी और किसी को भी नहीं |
एकबार उन्हें उनके पति और ससुराल वालों के द्वारा
विष देकर मारने की भी कोशिश की गई थी, किन्तु
उस विष का उन पर कोई असर नहीं हुआ और एक
दिन उन्होंने महल छोड़ दिया |

कृष्ण भक्त और सुप्रसिद्ध कवियत्री - मीरा बाई ने
अपना महल छो
दिया और भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग करके वे

प्रश्न क्र.

कृष्णभक्त गायिका बन गयी और श्री कृष्ण के प्रति अपने अगाध प्रेम के कारण उन्होंने अनेक भक्ति गीतों की रचना की। इन भक्ति गीतों के माध्यम से वे श्री कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को प्रकट करती थी। उन्होंने अनेक रचनाएँ भी की जैसे गीत गोविन्द टीका और मेवाड़ का मायरा और श्री कृष्ण से जुड़ी अनेक रचनाएँ की। उनके इन भक्ति गीतों को राजस्थान में आज भी गाया जाता है। इस प्रकार वे एक सुप्रसिद्ध कवयित्री बन गयी।

प्र.क्र.21 का उ. [अथवा]

उ. औपनिवेशिक काल में भवन निर्माण की प्रमुख तीन शैलियाँ प्रचलित थी जो निम्न है -

1. नियोक्लासीकल शैली।
2. नवगॉथिक शैली।
3. इंडो-सारसेनिक शैली।

1. नियोक्लासीकल शैली - बड़े बड़े स्तम्भों के पीछे रेखागणितीय रचनाओं का निर्माण इस शैली की प्रमुख विशेषता थी। भारत में इस शैली को ब्रिटिश शासकों के हिसाब से विशेष रूप से अनुकूल माना जाता था। अंग्रेजों का मानना था कि जिस शैली में शाही रोम की भव्यता दिखाई देती है, उस शैली का प्रयोग ब्रिटिश भारत के वैभव की अभिव्यक्ति के लिए किया जा सकता है। 1833 में मुम्बई का टाउन हॉल इसी शैली शैली को बनाया गया था।

2. नवगॉथिक शैली - इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ ऊँची उठी हुई क इमारतें, नोकदार मेहराबें

ST-16A4
MPBSE

प्रश्न क्र.

थी | इस शैली का जन्म इमारतों विशेषकर उन गिरिजो
से हुआ था जो मध्यकाल में यूरोप मे बनाए गए थे |
इंग्लैण्ड में 19 वी शताब्दी के मध्य में इस शैली को पुनः
अपनाया गया | यह वही समय था जब मुम्बई सरकार
भारत मे आधारभूत संरचनाओं का निर्माण कर रही थी |
उसके लिए इसी शैली को चुना गया | सचिवालय, बम्बई
विश्वविद्यालय और उच्च न्यायालय जैसी कई भव्य
इमारतें इसी शैली में बनाई गई थी | नवगॉथिक शैली
मे बनी कुछ इमारतों के लिए भारतीयों द्वारा धन का दान
किया गया था | भारतीय व्यापारियों को यह शैली पसंद
थी क्योंकि उनका मानना था कि अंग्रेजों की अन्य
योजनाओं की तरह उनकी भवन निर्माण शैलियाँ भी
प्रगतिशील थी |

इंडो-सारसेनिक शैली - 20वी शताब्दी के अंत एक नई
मिश्रित स्थापत्य शैली विकसित
जिसे इंडो-सारसेनिक शैली के नाम से जाना है | इंडो
हिन्दू शब्द का संक्षिप्त रूप जबकि सारसेनिक शब्द का
प्रयोग यूरोप के लोगों द्वारा मुसलमानों के लिए किया जाता
था | इस शैली पर यहाँ की मध्यकालीन इमारतों, गुम्बदों
छतरियो, जालियों का प्रभाव था | 1911 ई राजा जॉर्ज पंचम
और उनकी पत्नि के मेरी के स्वागत में बना गेटवे
वे ऑफ इंडिया परम्परागत गुजराती शैली का उदाहरण
था |

पृ.9.22 का उ.

उ.22 दांडी मार्च ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानून के
विरुद्ध एक मुख्य जनआंदोलन था" यह सत्य बात है |

प्रश्न क्र.

नमक राष्ट्र की एक बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पदा है परन्तु औपनिवेशिक शासकों ने इस पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया। गाँधी जी ने इस चोतरफा को अभिशाप माना। भारत में नमक का प्रयोग घरेलू इस्माल के लिए किया जाता था, लेकिन नमक के घरेलू उपयोग के लिए उत्पादन पर ब्रिटिश शासन ने रोक लगा दी और दुकानों से महँगे दामों पर नमक खरीदने के लिए मजबूर किया गया इसमें जनता के नमक बनाने के अधिकार पर रोक लगा दी इस कानून के विरुद्ध जनता में बहुत असंतोष था। गाँधी जी भी इस कानून को घृणित कानून मानते थे। इस कानून के विरोध मार्च 1930 में यह कानून तोड़ने के लिए एक यात्रा प्रारंभ की गई। इस कानून को तोड़ने के लिए एक अभियान चलाया गया। गाँधी जी ने अपने अहमदाबाद के पास वाले साबरमती आश्रम से समुद्र की ओर चलना प्रारंभ किया और एक लम्बी पैदल यात्रा के बाद उनका साथ अनेकों भारतीय ने दिया और समुद्र के पास आकर गाँधी जी ने लाखों लोगों के साथ मिलकर 6 अप्रैल 1930 को एक मुट्ठी नमक को हाथ में लेकर इस घृणित कानून को तोड़ दिया जिसके तहत उन्हें बाद में जेल में भी डाल दिया गया। दाण्डी मार्च घृणित कानून के विरुद्ध एक व्यापक जनआंदोलन था क्योंकि इस आन्दोलन में लाखों की संख्या में लोगों ने गाँधी जी का साथ दिया था। इतनी अधिक संख्या के इस आन्दोलन ने एक व्यापक जनआन्दोलन का रूप धारण कर लिया था क्योंकि इस कानून के प्रति जनता में बहुत असंतोष था इसलिए जनता ने इसका खूब समर्थन किया और खुलकर विरोध किया।

M P B S E

Roll No. ....

भारत
INDIA
(i) शिमला (हिमाचल प्रदेश)
(ii) कानपुर (उ.प्र)
(iii) जमशेदपुर (झारखंड)
(iv) दार्जीलिंग (असम)